Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 1.9152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 11 | July – 2017

उपन्यासकार : भीष्म साहनी

प्रा.डॉ.सौ.सुरैय्या इसुफअल्ली शेख
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक , अध्यक्षा–हिंदी विभाग,
मा.ह.महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,मोडनिंब. ता.माढा. जि.सोलापुर – (महा)

प्रस्तावना :

भीष्म साहनी गहन मानवीय संवेदना के सशक्त रचनाकार हैं। उन्होंने अपने कय साहित्य में आधुनिक भारत की ऐतिहासिक,सामाजिक उथल–पुथल के चित्र प्रस्तुत किये। इनमें वे एक यथार्थवादी आलोचक के रूप में सामने आते हैं।उनकी यथार्थवादी आलोचना दृष्टि की मार्क्सवादी पृष्ठभूमि स्पष्ट है। उसमें तत्कालीन राजनीतिक और अर्थव्यवस्था की भूमिका हैं। उन्होंने कथा साहित्य में भारतीय समाज की जिजीविषा को स्पष्ट किया है। सांस्कृतिकप्रदूषण को साफ किया है । शहर के मध्यमवर्गीय जीवन की पूँजीवादी व्यवस्था और उससे उत्पन्न आधुनिक बोध के कारण जो विकृतियॉ और विसंगतियॉ आरही हैं उनके आलोचनात्मक विश्लेषण के साथ–साथ भौतिक परिरिथतियों को ठोस आकृति में बॉधने केअपने प्रयास में वे सफल रहे हैं ।'

भीष्म साहनी का कथा संसार भारतीय जनता की स्वातंत्र्य प्राप्ति के पश्चात् की स्थितियों का प्रामाणिक चित्रण हैं । उनके कथा सन्दर्भो में सामंतवाद और पूँजीवाद के अंतर्विरोध वर्ग और वर्ग के अंतर्विरोध,मध्यवर्ग के आंतरिक अंतर्विरोध क्रमशः खुलते हैं । आधुनिक भारत के नगरों और महानगरों में रहनेवाला मध्यम वर्ग उनकी कथा के केंद्र में हैं । उसके पीछे उनका अपना यथार्थ जीवन है । भीष्म जी का रास्ता खुद संघर्षी से होकर बना है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है,उन्होंने जवानी में जन्मभूमि छोडी , शरणार्थियों की तरह इधर–उधर मटके,सांप्रदायिक दंगों के बीच ऑखो देखे समाचारों की रपटे लिखीः अंग्रेजी चालाकियों को देखा,कॉग्रेस नीतियों को जाना,कम्युनिस्ट कार्यकर्ता के रूप में गली–गली भ्रमण किया । इस प्रकार का व्यापक जीवन अनुभव ही उनकी रचना की मूल भूमि हैं । इसलिए उन्होनें अनेक सन्दर्भो में इस बात को स्वीकार किया है कि उनके लिए रचना कर्म और जीवनधर्म में अभेद हैं । वे जिस जीवन को जीते हैं, उसी को रचना में अभिव्यक्त करते हैं । जहॉ कहीं भी रचना के जीवन से परे होने की संभावना निर्मित होती हैं वहॉ वे रचना की सार्थकता को स्वीकार नहीं करते । उनके लिए एक सार्थक रचना जीवन की यथार्थ आलोचना और व्यापक व्याख्या हैं ।

यथार्थवादी दृष्टि ही भीष्म जी को उनकेद्वारा काल्पित पात्रों से जोड़ती है । वे उन्हीं पात्रों पर कहानी लिखते हैं जिन्हें वे जानते हैं । साथ हीवह अपने पात्रों,अपने कथानकों को जीवन की तरह प्रामाणिक बनने के लिए कठोर परिश्रम करते हैं। प्रगतिशील विचारधारा,पारदर्शी दृष्टि,सूक्ष्म विश्लेषण एवं निरीक्षण शक्ति के साथ–साथ गहरी संवेदनशीलता भीष्म जी के विशेष लेखकीय गुण हैं।इसी कारण पाठक और लेखक के बीच आवश्यक भावात्मक तादात्म्य यहॉ सहज संभव हो सकता है । पाठक को लगता है कि यह तो हमारे ही जीवन का परिवार का,परिवेश का अथवा हमारी समस्या का चित्रण है। भीष्म जी की रचनाऍ हमें जीवित रहने का एहसास कराती है और हमें समाज से जोड़ती हैं ।

भीष्म साहनी बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न रचनाकार हैं । उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में रचना की हैं। उपन्यास,कहानी,नाटक,निबंध,जीवनी,बालसाहित्य जैसी विधाओं में प्रभूत लेखन किया हैं। उनके समग्र साहित्य के समुचित आकलन एवं मूल्यांकन की दृष्टि से उनकी सभी कृतियों का संक्षिप्त परिचय आवश्यक हैं ।

उपन्यास :

1. झरोखे (1967) :

'झरोखे' मध्यवर्गीय परिवार की व्यथा – कथा को प्रस्तुत करनेवाला 1967 में प्रकाशित पहला उपन्यास है । इसमें लेखक के बाल्यकाल की अनुभूतियों का निरूपण किया गया है । 'झरोखे' एक मध्यवर्गीय आर्यसमाजी परिवार की कथा है,जिसमें गृहस्वामी प्रत्येक सदस्य के कानों में वैदिक मंत्रों की गूँज भरना चाहता है । किंतु गृहस्वामिनी अपनी तीन पुत्रियों के कारण व्याधित रहती है । इसलिए उसमें निराशा के भाव झलकते हैं । इस परिवार पर आर्यसमाज का इतना गहरा प्रभाव है कि परिवार का नौकर तुलसी भी आर्यसमाजी संस्कारों से मंड़ित हो जाता है ।

2. कडियॉ (1970) :

'कडियॉ' भीष्म साहनी का प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 1970 में प्रकाशित दूसरा उपन्यास है। यह भारतीय समाज में मध्यवर्गीय परिवार में पले महेंद्र नामक व्यक्ति के अवैध संबंधो की कहानी है। महेंद्र दफ्तर में अफसर है । उसी दफ्तर में कैशिअर सुषमा एक बंगाली लड़की है ,जो अपने पंगु पिता के प्रति दायित्व का निर्वाह करती है । महेंद्र के सुषमा के साथ इस अवैध संबंधो को जानकर प्रमिला की प्रतिकूल प्रतिक्रिया होती है, जिसका अनुमान महेंद्र को पहले से नहीं था ।

3. तमस (1973) :

'तमस' भीष्म साहनी का 1973 में प्रकाशित तीसरा उपन्यास है । प्रस्तुत उपन्यास 2 खंडों और 21 परिच्छेदों में विभाजित हैं । भीष्म साहनी का यह उपन्यास सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है । इसकी संप्रेय वस्तु और शिल्प कौशल उनकी वैचारिक दृष्टि प्रमाण है । उपन्यास का आरंभ नाटय शैली में होता है । नत्यू चमार एक सुअर को एकांत कोठरी में मारने का प्रयत्न करता है । वह अपने अनेक प्रयत्नों में असफल होता है । अपने कार्य के प्रति उसे ग्लानि भी होती है किंतु इस काम के लिए कमेटी के कारिदे मुराद अली नामक व्यक्ति द्वारा दिया गया 5 रूपये का चरमराता नोट उसे पुन : कर्मरत कर देता है ।

मुराद अली के आदेश पर नत्यू चमार द्वारा मारा गया सुअर दूसरी सुबह एक मास्जिद के सामने फेंका हुआ मिलता है। यही घटना हिंदू . मुस्लिम दंगे के भयानक रूपका कारण बन जाती है। इसी घटना की तीव्र प्रतिक्रिया में मुसलमानों द्वारा एक गाय की हत्या कर दी जाती है, जिससे हिंदू समाज अपना संतुलन खो देता है, और दोनों संप्रदायों के लोग हत्या,आगजनी और लूटपाट में जूट जाते हैं। यह उपन्यास स्वातंत्र्यपूर्व हिंदू–मुस्लिम सांप्रदायिक वैमनस्य का चित्र प्रस्तुत करता है ।

4. बंसती (1980) :

'बसंती' भीष्म साहनी का चौथा उपन्यास है,जिसका प्रकाशन 1980 में हुआ । इस उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य उन लोंगो की दारूण कथा है,जो गॉव की अभावग्रस्त जिंदगी को छोड़कर रोजी रोटी को तलाश में शहरों में आते हैं । इसमें दिल्ली के क्षेत्र में ऐसी ही बस्ती का चित्रण है,जहॉ विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से आकर लोग बसे हैं । इसमें विभिन्न प्रकार के मजदूरों का निवास है। वे सभी अवैध रूप सेझुग्गी झोपडियॉ ब नाकर रहते हैं । उनके घरों की महिलाएँ भी आसपास के घरों में कुछ काम करके जीविकोपार्जन करती है । इस प्रकार की बस्ती आज प्रत्येक महानगर के आसपास देखी जा सकती है ।

5. मैयादास की माडी (1988) :

'मैयादास की माडी'भीष्म साहनी का पॉचवा उपन्यास है,जिसका प्रकाशन 1988 में हुआ। यह उपन्यास 3 खंड़ो 15 भागों में विभाजित है । 344 पृष्ठों का यह उपन्यास आज तक के उनके सभी उपन्यासों में सबसे बडा : उपन्यास है । उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवर्ती सिकण इतिहास के उत्यान पतन के साथ माडी के मालिकों की भाग्यचक्र के त्यान पतन का प्रभावपूर्ण चित्रण इस उपन्यास में किया गया है । प्रस्तुत उपन्यास में चार पीढ़ियों का इतिहास प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन सामाजिक स्थितियों,राजनीतिक परिस्थितियों और उनके प्रभावों का चित्रण किया है ।

6. कुंतो (1993) :

'कुंतो' 1993 में प्रकाशित भीष्म साहनी का एक सामाजिक उपन्यास है,जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों,पारिवारिक स्थितियों,बदलती परस्मराओं,आधुनिक मानसिकताओं और नूतन जीवन दृष्टियों का प्रभावपूर्ण समावेश किया गया है। इस कथा की पृष्ठभूमि स्वातंत्र्यपूर्व स्थितियों पर आधारित है ।
प्रकाशन वर्ष के साथ उनके ये उपन्यास इसप्रकार प्रस्तुत किए जा सकते हैं ।

संदर्भ :.

अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व एवं् कृतित्व –शेखर वर्मा ।